

मैथिली / MAITHILI
(अनिवार्य) / (Compulsory)

निर्धारित समय : तीन घंटे

Time Allowed : **Three Hours**

अधिकतम अंक : 300

Maximum Marks : 300

प्रश्नपत्र विषयक विशेष निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबासँ पूर्व देल गेल निर्देशकें ध्यानपूर्वक पढ़ू :

सभ प्रश्न अनिवार्य अछि ।

प्रत्येक प्रश्न/भागक अंक ओकरा सामने अंकित अछि ।

उत्तर मैथिली (देवनागरी लिपि) मे लिखू जाधरि कि प्रश्नमे कोनो देसर निर्देश नहि हो ।

प्रश्नमे शब्दक संख्याक ध्यान राखू, अधिक वा कम शब्दमे उत्तर लिखला पर अंक काटल जा सकैत अछि ।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकामे रिक्त छोड़ल स्थानकेँ स्पष्ट रूपसँ अवश्य काटि दी ।

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question / part is indicated against it.

*Answers must be written in **MAITHILI** (Devanagari script) unless otherwise directed in the question.*

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Q1. निम्नलिखितसँ कोनो एक पर 600 शब्दमे निबन्ध लिखू :

100

- (a) उपभोक्तावादी जीवनशैली आ पर्यावरण
- (b) मोबाइल फोनक लत
- (c) ऑनलाइन शिक्षाक सीमा
- (d) आतंकवाद : एक चुनौती

Q2. निम्नलिखित गद्यांशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ू आ ओकर आधारपर नीचाँ देल गेल प्रश्नक उत्तर स्पष्ट, सही आ संक्षिप्त भाषामे दिअ :

12×5=60

जखन एक किसान खेतमे काज करैत अछि तड ओ खाद्यान्न एवं उद्योग लेल कच्चा मालक उत्पादन करैत अछि । बाड सैह कपड़ाक कारखाना, विद्युतचरखी आदिमे कपड़ाक रूप धारण कए लैत अछि । गाड़ी सामानकेँ एकसँ दोसर स्थान धरि पहुँचबैत अछि । हम जनैत छी जे कोनो देशमे एक बरखमे उत्पादित सभ वस्तु आ सेवाक कुल मूल्य एकर सकल घरेलू उत्पाद कहबैत अछि । हमरालोकनिकेँ निर्यात लेल मूल्य प्राप्त होइत अछि आ आयात लेल चुकता करए पड़ैत अछि । एहिमे हम देखैत छी जे शुद्ध आय धनात्मक, ऋणात्मक अथवा शून्य भए सकैत अछि । जखन हम प्राप्त अर्जनक योग करैत छी तड हमरालोकनिकेँ ओहि बरख लेल सकल घरेलू उत्पाद प्राप्त होइत अछि ।

सकल राष्ट्रीय उत्पादमे योगदान करएवला सभ क्रियाकलापकेँ हम आर्थिक क्रिया कहैत छी । ओ सभ व्यक्ति जे आर्थिक क्रियामे संलग्न रहैत छथि, श्रमिक कहबैत छथि, खाहे ओ उच्च अथवा निम्न कोनो टा स्तरपर काज कए रहल छथि । जौं एहिमे किछु लोक बिमारी, आहत होएब आदि शारीरिक कष्ट, खराप मौसम, तिहार अथवा सामाजिक-धार्मिक उत्सवक कारणेँ अस्थायी रूपसँ काजपर नहि आबि पबैत छथि, तइयो हुनका श्रमिके मानल जाइत अछि । एहि कार्यमे लागल मुख्य श्रमिक सहायता करएवलाकेँ सेहो हम श्रमिके मानैत छी । सामान्यतया हम एना सोचैत छी जे जिनका कार्यक एवजमे नियोक्ता द्वारा किछु भुगतान कएल जाइत छनि, हुनका श्रमिक कहल जाइत छनि, मुदा एहन नहि अछि ; जे व्यक्ति स्वनियोजित होइत छथि, ओहो श्रमिके होइत छथि ।

भारतमे रोजगारक प्रकृति बहुमुखी अछि । किछु लोककेँ बरख भरि रोजगार प्राप्त होइत छनि, तड किछु लोक बरखमे किछुए मास रोजगार पबैत छथि । अधिकांश मजूरकेँ अपन कार्यक उचित मजूरी नहि भेटि पबैछ । ओहन श्रमिकक संख्याक अनुमान लगबैत काल जतेक व्यक्ति आर्थिक कार्यमे जुड़ल रहैत छथि, हुनकालोकनिकेँ रोजगारमे जुड़ल लोकक श्रेणीमे सम्मिलित कएल जाइत अछि । बरख 2011 – 12 मे भारतक कुल श्रमशक्तिक आकार लगभग 473 मिलियन आकलित कएल गेल छल, किएक तड देशक अधिकांश लोक ग्रामीण क्षेत्रमे निवास करैत छथि, तेँ ग्रामीण श्रमबलक अनुपात सेहो शहरी श्रमबलसँ अधिक अछि । एहि 473 मिलियन श्रमिकमे तीन-चौथाइ श्रमिक ग्रामीण छथि ।

भारतक श्रमशक्तिमे पुरुषक बाहुल्य अछि । ग्रामीण क्षेत्रमे महिला श्रमिक कुल श्रमबलक एक-तेहाइ छथि, तड शहर सभमे 20 प्रतिशत मात्र महिलालोकनिक श्रमबलमे सहभागिता पाओल गेल अछि । महिलालोकनिक भोजन बनएबा, पानि आनब, ईंधन चुनबाक संग-संग खेत सभमे सेहो कार्य करैत छथि । हुनका सभकेँ नगद वा अन्नक रूपमे मजूरी नहि भेटैत छनि । कतेको मामिलामे तड किछुओ भुगतान नहि कएल जाइछ । एही कारण एहि प्रकारक महिलालोकनिकेँ श्रमिक वर्गमे सेहो सम्मिलित नहि कएल जाइत अछि । अर्थशास्त्रीलोकनिक आग्रह छनि जे एहि महिलालोकनिकेँ सेहो श्रमिके मानल जाएबाक चाही ।

- | | |
|--|----|
| (a) श्रमिक के होइत अछि ? | 12 |
| (b) सकल घरेलू उत्पाद की अछि ? | 12 |
| (c) भारतमे रोजगारक प्रकृति केहन अछि ? | 12 |
| (d) कोन महिलालोकनिकेँ श्रमिक नहि मानल जाइत अछि ? | 12 |
| (e) भारतमे श्रमिक जनसंख्या अनुपात की अछि ? | 12 |

Q3. निम्नलिखित अनुच्छेदक सारांश लगभग एक-तेहाइ शब्दमे लिखू । एकर शीर्षक लिखबाक आवश्यकता नहि अछि । सारांश अपनहि शब्दमे लिखू :

60

जे शब्द सभसँ कम बुझबामे अबैत अछि आ जकर उपयोग होइत अछि सभसँ बेसी, एहन दू शब्द अछि — सभ्यता आ संस्कृति । कल्पना करू ओहि समयक जखन मानव समाजकेँ अग्नि देवतासँ साक्षात् नहि भेल छल । आइ तड घरे-घर चूल्हि जरैत अछि । जे मानव पहिले पहिल आगिक आविष्कार कएने होएताह, ओ केहन आविष्कारक होएत । अथवा कल्पना करू ओहि समयक जखन मानवकेँ सुइ-तागक परिचय नहि छल । जे मानव लोहक एक टुकड़ीकेँ सुइक स्वरूप देने होएत, ओहो कतेक पैघ आविष्कारक होएत ।

एही दू उदाहरणपर विचार करू : पहिलुक उदाहरणमे दू बात अछि : पहिल, एक व्यक्ति विशेषकेँ आगिक आविष्कार करबाक शक्ति अछि एवं दोसर, आगिक आविष्कार । एही प्रकार दोसर सुइ-तागक उदाहरणमे एक चीज अछि सुइ-तागक आविष्कार करबाक शक्ति आ दोसर चीज अछि सुइ-तागक आविष्कार । जाहि सभ्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणाक बलपर आगिक अथवा सुइ-तागक आविष्कार भेल, ओ अछि व्यक्ति विशेषक संस्कृति; आ ओहि संस्कृति द्वारा जे आविष्कार भेल, जे चीज ओ स्वयं एवं दोसर लेल आविष्कृत कएल, ओकर नाम अछि सभ्यता ।

एक संस्कृत व्यक्ति कोनो नव वस्तुक खोज करैत अछि, मुदा ओकर सन्तानकेँ ओ खोज अपन पूर्वजसँ अनायासहि प्राप्त भए जाइत अछि । जाहि व्यक्तिक बुद्धि अथवा ओकर विवेक कोनो टा नव तथ्यक दर्शन कएल, ओएह व्यक्ति वास्तवमे, संस्कृत व्यक्ति अछि एवं ओकर सन्तान, जकरा अपन पूर्वजसँ ओ वस्तु अनायासहि प्राप्त भए गेल अछि, ओ पूर्वक सदृश सभ्य भनहि बनि जाए, संस्कृत नहि कहा सकैत अछि । एक आधुनिक उदाहरण लिअ । न्यूटन गुरुत्वाकर्षणक सिद्धान्तक आविष्कार कएल । ओ संस्कृत मानव छल । आजुक युगक भौतिक विज्ञानक विद्यार्थी न्यूटनक गुरुत्वाकर्षणसँ तड परिचित छथि; परञ्च ओहि संग ओकरा आओर सेहो अनेक बातक ज्ञान प्राप्त अछि, जाहिसँ प्रायः न्यूटन अपरिचित छलाह । एहन भेलोपर हम आजुक भौतिक विज्ञानक विद्यार्थीकेँ न्यूटनक अपेक्षा अधिक सभ्य भनहि कहि सकी, मुदा न्यूटन-सदृश संस्कृत नहि कहि सकैत छी ।

आगिक आविष्कारमे कदाचित् भूख एक प्रेरणा रहल । सुइ-तागक आविष्कारमे प्रायः शीतोष्णसँ बचबाक तथा शरीरकेँ सजएबाक प्रवृत्तिक विशेष हाथ रहल । आब कल्पना करू ओहि आदमीक जकर पेट भरल हो, जकर तन आवरित हो; मुदा जखन ओ मुक्त आकाशक नीचाँ सुतल रातुक जगमगाइत ताराकेँ देखैत अछि, तड ओकरा एहि कारण मात्रसँ नीन नहि अबैछ, किएक ओ ई जानबाक लेल व्यग्र अछि जे ई मोतीसँ भरल थारी की अछि ? पेट भरबाक एवं तन आवरित करबाक इच्छा मानव संस्कृतिक जननी नहि अछि । पेट भरल आ तन आवरित भेलोपर एहन मानव जे वास्तवमे, संस्कृत अछि, निठल्ला नहि बैस सकैत अछि । हमर सभ्यताक एक पैघ भाग हमरालोकनिकेँ एहने संस्कृत मनुष्यसँ भेटल अछि, जनिक चेतनापर स्थूल भौतिक कारणक प्रभाव प्रधान रहल अछि, मुदा ओकर अंश हमरालोकनिकेँ मनीषीलोकनिसँ सेहो भेटल अछि जे तथ्य विशेषकेँ कोनो भौतिक प्रेरणाक वशीभूत भए कए नहि, अपितु हुनक अपन आन्तरिक सहज संस्कृतिक कारणेँ प्राप्त कएने अछि । रातुक ताराकेँ देखि नहि सूति सकएवला मनीषी हमर आजुक ज्ञानक एहने प्रथम पुरस्कर्ता छलाह ।

(460 शब्द)

Q4. निम्नलिखित गद्यांशकेँ अंगरेजीमे अनुवाद करू :

20

समय अनमोल अछि । वास्तवमे, समये संसारक एकमात्र एहन वस्तु अछि, जे सीमित अछि । जौं अहाँ धन गमा दैत छी, तड दोबारा कमा सकैत छी । घर गमा दैत छी तड दोबारा पाबि सकैत छी, मुदा जौं समय गमा दैत छी तड अहाँकेँ ओ समय दोबारा नहि भेटि सकैछ ।

जौं हम जीवनमे किछु करए; किछु बनए, किछु पाबए चाहैत छी; तड ई अनिवार्य अछि जे हम समयक श्रेष्ठ उपयोग करब सीख ली । समयक सदुपयोग कए हम ओ सभ प्राप्त कए सकैत छी जे हम प्राप्त करए चाहैत छी ।

कहल जाइत अछि – “समये धन अछि”, परञ्च ई कहबी पूर्णतः सत्य नहि अछि; सत्य तड ई अछि जे समय मात्र संभावित धन अछि । जौं अहाँ अपन समयक सदुपयोग करैत छी, तखने अहाँ धन कमा सकैत छी । दोसर दिस जौं अहाँ अपन समयक दुरुपयोग करैत छी तड अहाँ धन

कमएबाक संभावना नष्ट कए दैत छी । जखन अहाँ समयक उपयोगकेँ लए सतर्क भए जाएब तखन समयकेँ नष्ट कएनाइ छोड़ि देब । अहाँ अपन समयक उत्तम उपयोगक अवसर ताकए लागब । अहाँ कम समयमे अधिक कार्य करबाक उपाय ताकए लागब । जौं अहाँ वास्तवमे, समय प्रबन्धन करए चाहैत छी, तड अहाँकेँ चेतन मोन मात्रक नहि, अपितु अवचेतनु मोनक सेहो उपयोग करए पड़त । इएह अहाँकेँ एहन-एहन नव उपाय सुझाओत, जकर बलपर अहाँ कम समयमे अधिक कार्य करबाक उपाय नाकएमे सफल होएब ।

Q5. निम्नलिखित गद्यांशकेँ मैथिलीमे अनुवाद करू :

20

We cannot deny the importance of games in life as games make a person sound in body and mind. Society expects of a person to fulfil all his duties, for which it is important for him to keep healthy. He may be very intelligent, but his intelligence is of no use if he is not healthy. In some ways, the human body is like a machine. If it is not made use of, it starts to work badly. People who are not fit grow weak, they become more prone to disease. Any form of game is useful, if it gives the body an opportunity to take regular physical exercise. Playing encourages the spirit of sportsmanship. It enables one to deal with life's problems in a wise and natural manner. The important thing in playing is not the winning or the losing, but the participation. We have to remember some other things about playing games. First, it is the physical exercise that is important for health, not the games themselves, and there are other ways of getting this. Is not India the home of yoga ? When we think of the phrase — a healthy mind in a healthy body — we should not forget that it is the mind which is mentioned first. And if we let games become the most important thing in our lives, then we undermine the importance of the mind.

Q6.	(a)	निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक लिखू :	2×5=10
	(i)	अधिकार	2
	(ii)	सृजन	2
	(iii)	अन्तरंग	2
	(iv)	प्रवेश	2
	(v)	अनावृष्टि	2
	(b)	निम्नलिखित शब्दक पर्यायवाची लिखू :	2×5=10
	(i)	जलज	2
	(ii)	माधव	2
	(iii)	लक्ष्मी	2
	(iv)	चन्द्र	2
	(v)	पृथ्वी	2
	(c)	निम्नलिखित लोकोक्तिक अर्थ स्पष्ट करैत वाक्यमे प्रयोग करू :	2×5=10
	(i)	बाड़ीक पटुआ तीत	2
	(ii)	अस्सी मोन पानि पड़ब	2
	(iii)	लंकाक छोट उनचास हाथ	2
	(iv)	ठेला पड़ब	2
	(v)	आगिमे घी ढारब	2
	(d)	निम्नलिखित अनेकक एक शब्द लिखू :	2×5=10
	(i)	जे मधुर बाजए	2
	(ii)	दिआदनिक बेटी	2
	(iii)	मीमांसाशास्त्र जननिहार	2
	(iv)	पृथ्वीके धारण कएनिहार	2
	(v)	जकर दमन कठिन हो	2

99NOTES